Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Deptt. of Philosophy
[illegible] College [illegible]
M.A. II Sem. (Philosophy)
CC-09 - Indian Linguistic trends.

"पतंजलि का स्फोटवाद"

पतंजलि की मान्यता
है कि शब्द नित्य होता है। वैयाकरण नित्य और अनित्य
शब्दों को [illegible] उत्पत्ति [illegible] होती है
[illegible] जो [illegible] वर्ण का आकार
[illegible] होता है। [illegible] वायु के [illegible] पर [illegible] नित्य
[illegible] शब्द [illegible] है और
और [illegible] अभिव्यक्त [illegible] है, जो स्फोट
[illegible] ग्रहण [illegible] जाता है [illegible] होता है, और
[illegible] कारण [illegible] में [illegible] अभिव्यक्त [illegible] है।
[illegible] आकाश में [illegible] आकाश [illegible]
शब्द का [illegible] आकाश की न तो उत्पत्ति
होती है और न ही विनाश। वह नित्य
होता है और वह निरवयव है। इसलिए शब्द
[illegible] अविनाशी [illegible] आधार है।
आकाश ही शब्द का आधार (गुण) है।
वस्तुतः शब्द आकाश का [illegible]
[illegible] अपने [illegible] (विशेष) [illegible] में [illegible]
[illegible] रहता। [illegible] है। अतः शब्द
[illegible] पाया जाता है। [illegible] का कारण
[illegible] आकाश [illegible] है [illegible] आकाश
है कि पतंजलि ने शब्द को [illegible] के पूर्ण
माना है। [illegible] उत्पत्ति - विनाश आदि
के [illegible] शब्द की [illegible], [illegible] आदि
उपलब्धि [illegible] से [illegible] ध्वनि [illegible] मात्र होती
है। इसलिए [illegible] श्रोत्र इन्द्रिय से उपलब्ध
किया गया है। ध्वनि का ग्रहण

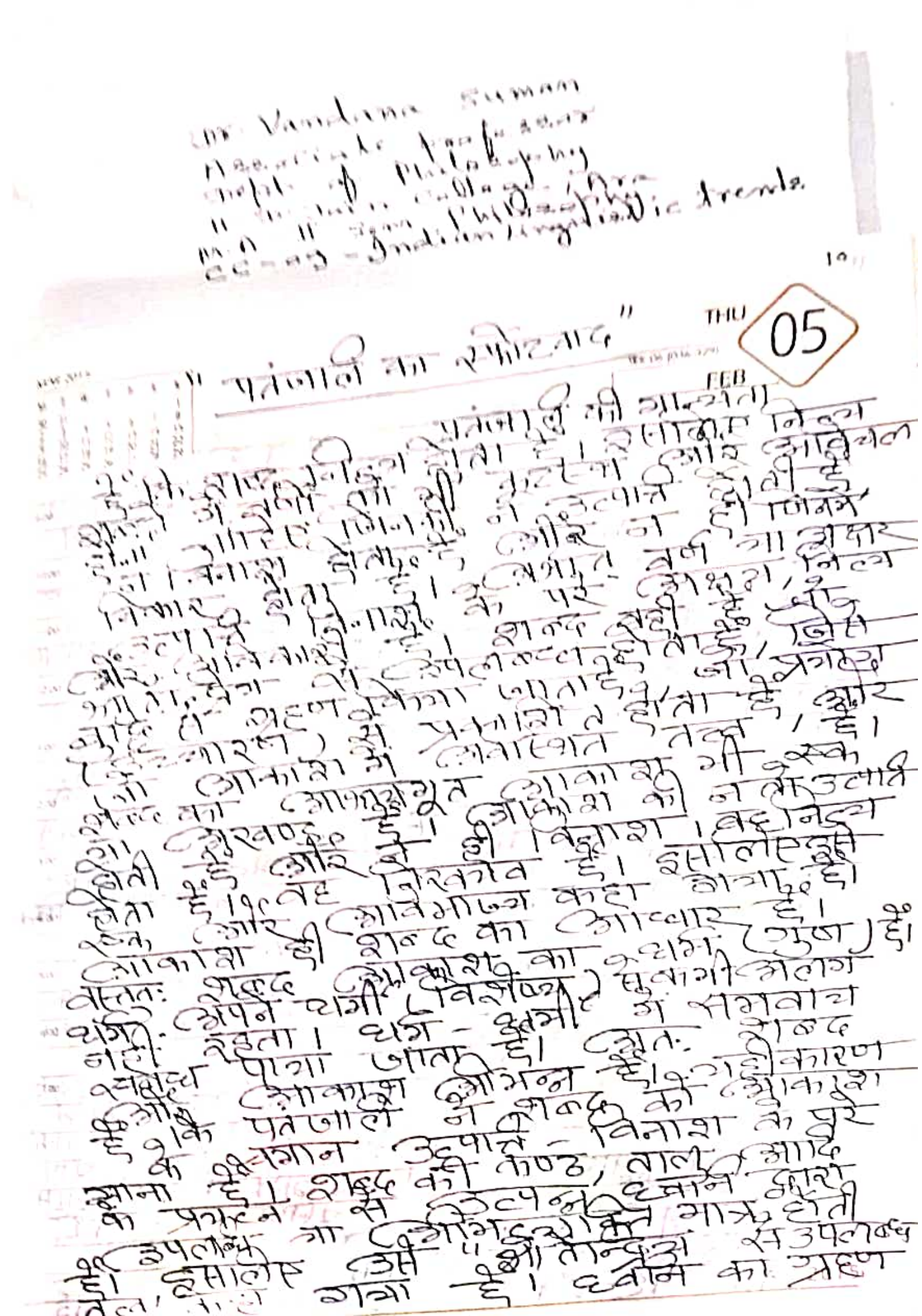

जो तेदिप्त ही करती हैं।

यदि शब्द उत्पत्ति-विनाश वाले हैं, तो शब्द में निहित वर्ण के अपने उच्चारण के अगले क्षण में विनष्ट होने पर शब्द की उपलब्धि का होना असम्भव है। परन्तु पतंजलि इस समस्या का समाधान शब्द को 'बुद्धिग्राह्य' की संज्ञा देकर करते हैं। प्रत्येक पूर्व ध्वनि से उत्पन्न वैशिष्ट्याकृति की संस्कार परम्परा बनती जाती है। ध्वनि के विनष्ट होने पर यह वैशिष्ट्याकृति संस्कार रूप में बुद्धि में स्थित रहती है। अब अन्तिम परिपाक की स्थिति में शब्द के अन्तिम वर्ण का ज्ञान अथवा अन्तिम ध्वनि से उत्पन्न अभिव्यक्ति का ज्ञान होता है, तब शब्द का ग्रहण होता है। इसलिए शब्द को बुद्धिग्राह्य कहा गया है। परिपाक का अर्थ है स्फोट का रूप बोधगम्य होना। यह एक-एक ध्वनि से विशिष्टतर, विशिष्टतम रूप में पुनः पुनः होता है। इसलिए परिपाक भिन्न-भिन्न होते हैं और इसे "आवृत्त परिपाक" कहा गया है। मण्डन मिश्र ने उदाहरण द्वारा परिपाक शब्द को समझाने का प्रयास किया है। उनके अनुसार जब कोई जौहरी किसी रत्न की जाँच करता है तो उसके सामने रत्न की पहचान — उसके नाम और

स्वरूप की समस्या रहती है। वह इस समस्या के समाधान के लिए रत्न को बार-बार देखता है। बार-बार देखने से उसकी बुद्धि में रत्न के स्वरूप सम्बन्धी गृहीत संस्कारों की अभिवृद्धि हो जाती है। अब जौहरी अन्तिम निर्णय पर पहुँचने के लिए अन्तिम बार रत्न को देखता है, तो वह रत्न की वास्तविकता को जान लेता है। यदि बार-बार देखने से विशिष्ट-विशिष्ट संस्कारों का आधान नहीं माना जाय, तो रत्न की वास्तविकता का प्रकाशन अन्तिम पश्चात नहीं हो पायेगा। इसका कारण है कि प्रथम दर्शन (पहले क्षण का देखना) मध्य और अन्तिम दर्शन (बाद के क्षणों का देखना तथा अन्तिम क्षण का देखना) में कोई विशिष्टता ही नहीं रहेगा। स्फोट में भी माना है कि शब्द का पूर्ण ज्ञान उसके अन्तिम वर्ण के ज्ञान से ही सम्भव है तथा इससे पूर्व आने वाली ध्वनियाँ शब्द की अभिव्यक्ति करती हैं। इस अभिव्यक्ति से उत्पन्न संस्कारों के साथ अन्तिम वर्ण के ज्ञान का योग होने पर ही पूर्ण शब्द का ज्ञान होता है। पूर्व उच्चरित ध्वनियों से अभिव्यक्त शब्द तत्व का संस्कार तथा शब्द के अन्तिम वर्ण के ज्ञान से संस्कार-परम्परा के योग की यह प्रक्रिया जिससे पूर्ण शब्द का ज्ञान होता है, बुद्धि में घटित होती है। अतः शब्द बुद्धि ग्राह्य है।

पतंजलि का मानना है कि "शब्द में स्फोट और ध्वनि दोनों रहते हैं। ध्वनि का रूप क्षणिक होने के कारण ध्वनि दिखायी पड़ती है। लघुता और दीर्घता और ह्रास ध्वनि का ही धर्म है। जैसे कि की ध्वनि कुछ दूर तक ही जाती है तो कुछ नगाड़े की ध्वनि अधिक दूर तक जाती है। दोनों में स्फोट एक-सा ही रहता है किन्तु उसके प्रसार (दूर व नजदीक) की दीर्घता और लघुता ध्वनि के कारण रहा करती है। पतंजलि की इस मान्यता का समर्थन नागेश और कैयट ने भी किया है। नागेश ने भी कैयट का समर्थन करते हुए कहा है कि स्फोट और ध्वनि में व्यंग्य-व्यंजक का सम्बन्ध है। स्फोट व्यंग्य है और ध्वनि व्यंजक है। ध्वनि से ही अव्यक्त स्फोट की अभिव्यंजना होती है। वृद्धि और ह्रास स्फोट की व्यंजना करने वाली ध्वनि में दिखती है। व्यंजक के वृद्धि-ह्रास से व्यंग्य स्फोट में कोई अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि स्फोट काल-भेद से मुक्त है। ध्वनि स्वयं को प्रकाशित करते हुए स्फोट को भी प्रकाशित करती है। अतएव ध्वनि और स्फोट दोनों प्रत्यक्ष सिद्ध हैं। ध्वनि ही वह साधन है जो शब्द या स्फोट को अभिव्यक्त करती है। ध्वनि अनित्य है, परिवर्तनशील है, जबकि स्फोट शब्द नित्य है, अपरिवर्तनशील है। वस्तुतः पतंजलि ने शब्द और उसके अर्थ (स्फोट) में भेद नहीं किया है। वे अभेद और एक हैं। यही कारण है कि शब्द को अर्थ का संकेतक माना गया है या स्फोट को शब्दतत्त्व कहा गया है।